

जलाभिषेक पाठ

(श्री हरजसरायजी कृत)

(दोहा)

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान ।

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौ जोरि जुगपान ॥

(अडिल्ल और गीता)

श्री जिन जग में ऐसो को बुधवंत जू ।

जो तुम गुण वरननि करि पावै अन्त जू ॥

इन्द्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनि ।

कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवन धनी ॥

अनुपम अमित तुम गुणनि वारिधि ज्यों अलोकाकाश है ।

किमि धरै हम उर कोष में सो अकथ गुण-मणिराश है ॥

निज प्रयोजनसिद्धि की तुम नाम ही में शक्ति है ।

यह चित्त में सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है ॥१॥

ज्ञानावरणी दर्शन-आवरणी भने ।

कर्म मोहनी अन्तराय चारों हने ॥

लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में ।

इन्द्रादिक के मुकुट नये सुरधान में ॥

तब इन्द्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरनयुत वंदत भयौ ।

तुम पुण्य को प्रेस्यौ हरि ह्वै मुदित धनपति सौं कह्यो ॥

अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपद को करौ ।

साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ ॥२॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति ।

चल आयो तत्काल मोद धारैं अति ॥

वीतराग छबि देखि शब्द जय-जय कह्यो ।

देय प्रदच्छिना बार-बार वंदत भयौ ॥

अति भक्ति भीनो नम्रचित ह्वै समवशरण रच्यो सही ।

ताकी अनूपम शुभ गति को कहन समरथ कोउ नहीं ॥

प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजही।
नगजड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजही ॥३॥

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।

ता पर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै ॥

तीन छत्र सिर शोभित चौंसठ चमरजी।

महाभक्तियुत ढोरत हैं तहाँ अमरजी ॥

प्रभु तरनतारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।

यह वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि, भविजन सुख लिया ॥

मुनि आदि द्वादश सभा के, भवि जीव मस्तक नायकैं।

बहुभाँति बारम्बार पूजैं, नमैं गुणगण गायकैं ॥४॥

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।

क्षुधा तृषा चिन्ता भय गद दूषण नहीं ॥

जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसैं।

राग रोष निद्रा मद मोह सबैं खसैं ॥

श्रम बिना श्रम जलरहित पावन, अमल ज्योति स्वरूप जी।

शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूप जी ॥

ऐसे प्रभु की शांतमुद्रा को न्हन जलतैं करैं।

‘जस’ भक्तिवश मन उक्ति तैं, हम भानु ढिंग दीपक धरैं ॥५॥

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।

तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो ॥

मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यौ।

महामलिन तन में वसु विधिवश दुख सह्यौ ॥

बीत्यो अनंतो काल यह, मेरी अशुचिता ना गई।

तिस अशुचिताहर एक तुम ही, भरहु वांछा चित ठई ॥

अब अष्टकर्म विनाश सब मल, दोष-रागादिक हरौ।

तनरूप कारागेह तैं, उद्धार शिववासा करौ ॥६॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।

आवागमन विमुक्त रागवर्जित भये ॥

पर तथापि मेरो मनरथ पूरत सही ।
 नय-प्रमाण तैं जानि महा साता लही ॥
 पापाचरण तजि न्हन करता चित्त में ऐसे धरूँ ।
 साक्षात् श्री अरहंत का मानो न्हन परसन करूँ ॥
 ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नशि शुभबन्ध तैं ।
 विधि अशुभ नसि शुभ बन्धतैं द्वै शर्म सबविधि तासतैं ॥७॥
 पावन मेरे नयन भये तुम दरस तैं ।
 पावन पाणि भये तुम चरननि परस तैं ॥
 पावन मन द्वै गयो तिहारे ध्यान तैं ।
 पावन रसना मानी, तुम गुण गान तैं ॥
 पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण धनी ।
 मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी ॥
 धनि धन्य ते बड़भाणि भवि तिन नींव शिवघर की धरी ।
 वर क्षीरसागर आदि जल मणि-कुम्भभरी भक्ति करी ॥८॥
 विघन-सघन-वन-दाहन दहन प्रचण्ड हो ।
 मोह-महातम-दलन प्रबल मार्तण्ड हो ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश आदि संज्ञा धरो ।
 जगविजयी जमराज नाश ताको करो ॥
 आनन्दकारण दुख निवारण, परममंगलमय सही ।
 मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं ॥
 चिंतामणि पारस कलपतरु, एक भव सुखकार ही ।
 तुम भक्ति-नौका जे चढ़े, ते भये भवदधि पार ही ॥९॥
 तुम भवदधि तैं तरि गये, भये निकल अविकार ।
 तारतम्य इस भक्ति को, हमैं उतारो पार ॥१०॥

निर्मल वस्त्र से प्रतिमाजी को साफ कर निम्न श्लोक बोलकर गन्धोदक ग्रहण करें -

निर्मलं निर्मलीकरणं पावन पापनाशनम् ।
 जिनचरणोदकं वंदे कर्माष्टक-विनाशनम् ॥

